हमारे गौरवशाली विश्वविद्यालय के पूर्व एवं वर्तमान विद्यार्थियो, आचार्यो,
अतिथियो एवं अभिभावको ।

आओ मिलकर . . . .

आओ मिलकर
इस ज्ञान–पीठ के गौरव गान
को फिर से ध्वनित करें
दशोदिश ।

ज्ञान–विज्ञान का संधान,
शिक्षा–श्रम की तूलि,
की भाव भूमि से युक्त हम
स्पर्श करें उच्च मान ।

नव सृजन शोध यज्ञमय कर्म
सदा रहें जीवन आराध्य,
श्रुति चिन्तन, ज्ञान प्रवाह
देश हित बने हमारा जीवन साध्य ।

गौरवमय इतिहास जागरण
नव चैतन्य विज्ञान विधायक
उषा काल का पवन संजीवन
जग जीवन में करें संवरण

रचें रूप स्व तक्षशिला का
लक्ष्य न ओझल होने पाए
गठित करें नव कौशल प्रबंधन
उन्नत भाल इस ज्ञान सदन का

करें भविष्य का नव निर्माण
जिसमें भासित हो जन कल्याण
हमसे ज्योतित हो भारत का
दिव्य लक्ष्य, स्वर्णिम विहान ।।

आओ मिलकर . . . ।

–जगदीश प्रसाद सिंघल